सामाजिक समस्या को सुलझाने और समझाने में मनोवृत्ति एक महत्वपूर्ण कुंजी या कारक है।

(iv) अच्छी पुस्तकें और महान व्यक्तित्व :-

अच्छी पुस्तकों एवं महान लोगों की जीवनी पढ़ने से भी अभिवृत्ति का निर्माण एवं विकास होता है।

(v) तात्कालिक अनुभव :-

जीवन में होने वाली आकस्मिक घटनाओं से भी अभिवृत्ति का निर्माण व विकास होता है।

- सिद्धार्थ ने जब विभिन्न समयों में बीमार, वृद्ध, मृतक और सन्यासी को देखा तो उनकी भौतिकतावादी मनोवृत्ति परिवर्तित हो गयी और उन्होंने गृहत्याग का निर्णय लिया और कालांतर में निर्वाण की प्राप्ति की।
- गांधी जी सत्याग्रह के माध्यम से पापी व अत्याचारी का हृदय परिवर्तित किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पटेल ने अनुनय के माध्यम से देशी रियासतों का एकीकरण कर दिया।

अभिवृत्ति के प्रकार्य / वृद्धि (Functions)

जीवन में आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न अभिवृत्तियों का निर्माण व विकास होता है इस रूप में अभिवृत्तियाँ विभिन्न प्रकार के प्रकार्यों का सम्पादन करती हैं।

अनुकूलन प्रकार्य :-

कुछ अभिवृत्तियों हमें अप्रिय / नापसंद वस्तुओं को दूर करने एवं वांछित या पसंदीदा वस्तुओं को प्राप्त करने में मदद करती हैं। हम उन कार्यों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करते हैं और प्राथमिकता देते हैं जहाँ प्रशंसा और पुरस्कार की संभावना होती है पुनः उन कार्यों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करते हैं जहाँ दण्ड और निंदा की संभावना होती है।

प्रशासनिक सन्दर्भ में अनुकूलन वृत्ति का प्रयोग प्रशासकों के कार्य को अधिक प्रभावी और कुशल बनाने में किया जाता है।

ज्ञान प्रकार्य :-

यह अभिवृत्ति के संज्ञानात्मक पक्ष से संबंधित है। इसके माध्यम से हम विभिन्न घटनाओं के कारण और उनके निदान को समझने में सक्षम हो जाते हैं। इससे अपने अनुभवों को संगठित करने और संगत दृष्टिकोण को विकसित करने में मदद मिलती है।

मूल्य अभिवृत्ति प्रकार्य :-

यह व्यक्ति द्वारा स्वीकृत मूल्यों एवं आत्म प्रत्यय को अभिव्यक्त करने में मदद करती है। यह अभिवृत्ति हमें बताती है कि हम कौन हैं और क्या प्राप्त करना चाहते हैं।

एक व्यक्ति अपने गुणों एवं व्यवहारों के सन्दर्भ में जो मत रखता है वही उसका आत्म प्रत्यय है।

यह आत्म प्रत्यय व्यक्ति के व्यवहारों, योग्यताओं और गुणों के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अहम रक्षार्थ प्रकार्य :-

यह अभिवृत्ति व्यक्ति के अहम या आत्मसम्मान की रक्षा का कार्य करती है। कुछ अभिवृत्तियाँ हमें हमारे आत्मसम्मान और पहचान को कमजोर करने वाली घटनाओं एवं सूचनाओं से रक्षा करती है जैसे- अपनी कमियों और गलतियों को दूसरे के ऊपर डालना। अपने दोषों और असफलताओं पर पर्दा डालने का प्रयास करना।

अभिवृत्ति के प्रकार्य

- अनुकूलन लक्ष्य
  - साधक → सकारात्मक
  - बाधक → नकारात्मक
- ज्ञान → विभिन्न वस्तुओं या घटनाओं के कारण परिस्थिति परिणाम → को जानते हैं। अनुभव करते हैं।
- मूल्यअभिव्यक्ति → स्वीकृत मूल्यों और आत्म प्रत्यय को व्यक्त करने में सहायक
- अहम रक्षार्थ → आत्म-सम्मान एवं स्वाभिमान के रक्षा में सहायक।

विचार और आचरण के परिप्रेक्ष्य में

अभिवृत्ति का प्रभाव और संबंध :-

- अभिवृत्ति के विपरीत व्यवहार :-

- पारिवारिक और सामाजिक दबाव के कारण कई बार अपनी धारणा, विश्वास, विचार एवं पसंद के विपरीत कार्य करना पड़ता है, शिक्षा, व्यापार, विवाह आदि के सन्दर्भ में ऐसी स्थिति अधिक दिखाई देती है।
- दण्ड और पुरस्कार से प्रेरित होकर
- आवश्यकता पूर्ति हेतु
- विकल्पों या सामर्थ्यों के अभाव में
- पुरस्कार और सम्मान की लालसा में
- लोग क्या कहेंगे और लोग क्या सोचेंगे के दबाव में
- आकस्मिक घटित घटनाओं और कुछ विशिष्ट परिस्थितियों के होने पर भी हम अपने ज्ञान और पसंद के विपरीत कार्य करते हैं।
- अभिवृत्ति की एक विशेषता यह भी हो सकती है कि सामान्यतः अभिवृत्ति के आधार पर हम लोगों के व्यवहार का अनुमान लगा सकते हैं परन्तु कभी-कभी अभिवृत्ति कुछ और रहेगी और व्यवहार कुछ और हो सकता है।
- जब ज्ञान पर्याप्त हो विचार सुदृढ़ हो तथा पसंद की मात्रा अधिक हो तो फिर उसके अनुरूप व्यवहार होता है।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR